B.A. (Part-II) EXAMINATION, 2018

(10+2+3 Pattern) (Faculty of Arts)

[Also Common with Subsidiary Paper of B.A. (Hons.) Part-II Three-Year Scheme of 10+2+3 Pattern]

हिन्दी साहित्य

द्वितीय प्रश्न-पत्र—नाटक एवं एकांकी

Time Allowed : Three Hours Maximum Marks : 100

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न-पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखें। सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न हेतु निर्धारित अंक उसके सामने अंकित हैं।

खण्ड-अ

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए–

(अ) जीवन के आदि और उत्कर्ष के बीच एक और सीढ़ी है–जीवन का पुरुषार्थ। अपराध क्षमा को आचार्य, आपकी कला उस पुरुषार्थ को भूल गयी है। जब मैं इन मूर्तियों में बँधे रसिक जोड़ों को देखता हूँ तो मुझे याद आती है पसीने में नहाते हुए किसान की, कोसों तक धारा के विरुद्ध नौका को खेने वाले मल्लाह की, दिन-दिन भर कुल्हाड़ी लेकर खटने वाले लकड़हारे की। ..... इनके बिना जीवन अधूरा है, आचार्य। 9

अथवा

कैसी अद्‌भुत थी मेरी माँ! आँधियों के निर्दय झकझोर से भी न झुकने वाले तालवृक्ष की तरह। मुझे गोदी में लिये, बहुत पहले, जब वह नगर में आयी थी, तो कौन उनका सहायक था ? मजदूरी करके, गरीबी के कष्ट और वैभव के अपमान सहकर, उसने मुझे पाला! 9

(ब) वह सारे जीवन का प्रतिबिम्ब है। देखो हमारे कोणार्क देवालय को आँखें भरकर देखों। यह मन्दिर नहीं सारे जीवन की गति का रूपक है। हमने जो मूर्तियाँ इसके स्तम्भों, इसकी उपपीठ और अधिस्थान में अंकित की है, उन्हें ध्यान से देखो। देखते हो, उनमें मनुष्य के सारे कर्म, उसकी सारी बासनाएँ, मनोरंजन और मुद्राएँ चित्रित है। यही तो जीवन है। 9

अथवा

ऐसे समय में पावस की बातास की भाँति तृषित भूमि में यह युवक आ पहुँचा, इसकी अद्वितीय सूझ मेरे लिए आकाशवाणी बनी, खोय राही का पथ प्रदर्शन हुआ। और सात दिन में ही इसके अनवरत परिश्रम और प्रतिमा ने कोणार्क के शिखर को पूरा कर दिया।

खण्ड-ब

2. निम्नलिखित अवरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिये :

(अ) तुमने मेरे संसार में आग लगा दी डॉक्टर। तुमने कभी स्त्री के हृदय की थाह नहीं ली कि वह प्रेम करते समय समुद्र से भी अधिक गहरी और गम्भीर हो जाती है और निराश होने पर आग की लपट से भी अधिक भयानक, जिसकी एक-एक चिनगारी से सारा जीवन जल-जल कर बुझता है, जिससे उसे बार-बार जलना पड़े। जैसे हृदय के पास निकला हुआ फोड़ा हो, जो हृदय की धड़कन से दर्द करे। फिर भी मैं मौन

रही, हँसती रही, लेकिन तुनमे, यह न समझा कि छाया इसलिए बढ़ रही है, क्योंकि उसके जीवन का सूर्य ढल रहा है। 9

अथवा

तुमन जाती हो भय छोड़ देने से क्यां होगा ? तब मैं कुछ मिटा नहीं सकता, नाश नहीं कर सकता। मुझे बराबर सृजन करना होगा। (रुआँसा होकर) और तब हमारी आत्मा और शरीर के मंथन से जो निकलेगा वह हमें मार डालेगा। हमारा अन्त कर देगा। तुम बूढ़ी हो जाओगी, जीवन क्रीड़ा नन्हीं-सी रतन जड़ी रिस्टवाच की तरह रुक जाएगी। 9

(ब) जी हाँ। और इस आवाज के लिए अपने को बर्बाद कर दिया था, लेकिन जनता नये इन्सान की आवाज नहीं सुनना चाहती। उसे सच्चाई की आवाज नहीं चाहिए। उसे चाहिए शोख कवर, भड़कीले चित्र, रंग-बिरंगे विशेषांक .....! 9

अथवा

नहीं। ..... मेरा अतीत मुझे थकाता है, शक्तिहीन कर देता है। मैं निस्तेज पड़ जाता हूँ। मैं याद भी नहीं करना चाहता कि मैं ..... मैं ..... मैं ..... एक गली की अन्धी भिखारिन का पूत हूँ अशुभ ..... निरीह ..... निराधार ..... व्याज्य! 9

3. (अ) 'कोणार्क' नाटक का नायक कौन है ? उसके चरित्र की विशेषताएँ उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए। 14

अथवा

'कोणार्क' नाटक का उद्देश्य समझाइये। 14

(ब) नाटक के तत्त्वों के आधार पर 'कोणार्क' नाटक की समीक्षा कीजिए। 14

अथवा

''विशु और धर्मपद का पिता-पुत्र का नाता और तत्सम्बन्धी करुण कथा जैसे इतिहास केगर्जन में मानव-हृदय की धड़कन भी घुल-मिलकर नाटक को मार्मिकता प्रदान करती है।'' कोणार्क के बारे में कहे गये इस कथन की मीमांसा कीजिए। 14

4. (अ) लक्ष्मीनारायण लाल के एकांकी 'कालपुरुष और अजन्ता की नर्तकी' की एकांकी के तत्त्वों के आधार पर विशेषताएँ बताइए। 14

अथवा

एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'ममता का विष' एकांकी की समीक्षा कीजिए। 14

(ब) '' 'हरी घास पर घण्टे भर' एकांकी में एक ओर प्रेम की गहराई है तो दूसरी ओर मिलन की उद्दायता।'' इस कथन के परिप्रेक्ष्य में एकांकी की समीक्षा कीजिए। 14

अथवा

'ताँबे के कीड़े' एकांकी के शीर्षक का औचित्य स्पष्ट करते हुए इसकी मूल संवेदना स्पष्ट कीजिए। 14

5. निम्नलिखित टिप्पणियों में से कोई दो पर टिप्पणी कीजिए।

(क) नाटक और एकांकी में अन्तर।

(ख) स्वातन्त्रयोत्तर हिन्दी नाटक के विकास चरण।

(ग) लक्ष्मीनारायण मिश्र का नाटकीय क्षेत्र में योगदान।

(घ) मोहन राकेश के नाटकों पर संक्षिप्त लेख। 4×2=8